

ग्रामीण समाजशास्त्र का महत्व Importance of Rural Sociology

स्वातंत्र्य के बाद हमारे देश के लिए ग्रामीण सामाजिक संगठन, इनकी पर्यवेक्षण, कार्य और विकास का एक अतीवश्यक अध्ययन होना बहुत आवश्यक है। ग्रामीण समाजशास्त्र के अध्ययन के व्यावहारिक मूल्य को आज व्यापक रूप से मान्यता प्राप्त है। ग्रामीण समाजशास्त्र, जिनका उद्देश्य ग्रामीण समाजों और जीवन के लिए अतीवश्यक और वैज्ञानिक दृष्टिकोण प्रदान करना है, काफी महत्व रखता है क्योंकि भारत में आजादी के बाद ग्रामीण समाज ने नया महत्व हासिल कर लिया है। ग्रामीण समाजशास्त्र की सहायता से यह पता लगाना संभव है कि ग्राम समुदाय की आत्मनिर्भरता के टूटने के क्या कारण हैं।

गाँव प्रगति कर लिये इसके लिए ग्रामीण समाज का एक विशेष अध्ययन आवश्यक है। ग्रामीण समाजशास्त्र का जीव आधुनिक संदर्भ में पारंपरिक ग्रामीण समाज के निहितार्थों का विश्लेषण करना है। निम्न बिन्दुओं द्वारा इसके महत्व की समझा जा सकता है:—

① शैक्षणिक महत्व (Educational Importance) →

ग्रामीण समाजशास्त्र ग्रामीण संस्कृति, जीवन-समूह सामाजिक सम्बन्धों, प्रक्रियाओं, चर्म, अर्थव्यवस्था, राजनीति, आदि के बारे में परिभाषाएं प्रस्तुत करता है और उनके महत्व की दर्शाता है। इस प्रकार से ग्राम्य जीवन में सम्बन्धित सूचनाओं को एकत्रित करने एवं प्रसारित करने का कार्य भी ग्रामीण समाजशास्त्र का है। ग्रामीण समाजशास्त्र ग्रामीणों को अपने अधिकारों एवं कर्तव्यों के प्रति जागरूक बनाता है, उन्हें प्रजातन्त्र की शिक्षा प्रदान करता है और इस प्रकार से जनशिक्षण का कार्य करता है।

② ग्रामीण सामाजिक समस्याओं के अध्ययन में सहायक (Helpful in studying the Rural social problems) →

प्राचीन गाँव आत्मनिर्भर और लघु गणतन्त्र थे

उस स्थिति में ग्राम्य जीवन आनन्दमय था, किन्तु वर्तमान में औद्योगिकीकरण एवं नगरीकरण के प्रभाव के परिणामस्वरूप ग्रामों में अनेक सामाजिक, आर्थिक समस्याओं का जन्म लिया है। जमीनी, बेकारी, बीमारी, गणप्रतन्त्रता, कृषि एवं श्रमिक की समस्या, गंधा, जाति, साम्प्रदायिकता एवं शिक्षा आदि की समस्याओं का अध्ययन करने उनके कारणों का पता लगाने, आदि के लिए ग्रामीण समाजशास्त्र का योगदान प्राप्त किया जाना चाहिए ताकि समस्याओं को उनके वैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य में देखा जा सके और उनका समुचित हल निकाला जा सके।

③ व्यावसायिक महत्व (Vocational Importance)

ग्रामीण समाजशास्त्र में डिग्री प्राप्त व्यक्तियों को विभिन्न विभागों में नियुक्त किया जाता है जिससे कि उनके ज्ञान का अधिकतम उपयोग हो सके। जैसे - अनुसन्धान विभाग, योजना आयोग, समन्वित ग्रामीण विकास कार्यक्रम, समाज शिक्षा, ग्राम विकास, सामाजिक बीमा, सुधार संस्थाएं आदि अनेक ऐसे क्षेत्र और विभाग हैं जिनमें ग्रामीण समाजशास्त्रीय ज्ञान और विद्वानों का उपयोग किया जाता है।

④ समाजशास्त्रीय महत्व (Sociological Importance)

ग्रामीण समाज की संरचना तथा विकास के निम्न सामान्यतः हमें उन विशिष्ट निम्नों की खोज में सहायता दे सकते हैं, जो एक विशिष्ट समाज को शासित करते हैं। इनलिए ग्रामीण समाज के ज्ञान के बिना विशिष्ट ग्रामीण समाज का प्रमाणित चित्र उपलब्ध करना संभव नहीं है। केवल ग्रामीण समाजशास्त्र ही विशिष्ट ग्रामीण समाज का सही, सजीव, समन्वित एवं बहुपक्षीय ज्ञान तथा आगे के विकास की ओर उसकी प्रवृत्ति का परिचय दे सकता है।

⑤ ग्रामीण समाजशास्त्र एक अत्यावश्यक पथ प्रदर्शक के रूप में (Rural Sociology as an Indispensable Guide)

वर्तमान में ग्रामीण समाजों में अनेक परिवर्तन घटित हुए हैं। समाज की प्रकृति में भी परिवर्तन आया है जिसे ग्रामीण कार्यकर्ता को समझना चाहिए। यदि

वह बिना लम्बे सामाजिक बुराईयों को दूर करने के लिए वही पद्धति अपनाता है जो प्राचीन ग्रामीण समाजों के लिए अपनायी जाती थी तो उनकी सफलता संदिग्ध है। वर्तमान समाज की बुराईयों उनकी स्वयं की आन्तरिक संरचना के दोषों के कारण उत्पन्न हुई हैं जिनका हल अपने समाज में निहित साधनों द्वारा ही किया जाना चाहिए। ग्रामीण पुनर्निर्माण का कार्यक्रम ग्रामीण समाजों में पायी जाने वाली वास्तविक दशाओं और प्रवृत्तियों का समाजशास्त्रीय विश्लेषण करके ही तैयार किया जाना चाहिए।

6) कृषि - प्रख्यान समाजों के लिए उपयोग (Useful for Agricultural societies) →

कृषि ही सम्बन्धित अनेक समस्याओं का प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष सम्बन्धित ग्रामीण जीवन है ही है। अतः ग्रामीण विकास और उत्थान के कार्यक्रम का सम्बन्धित कृषि ही ही है। उन्नत खाद एवं बीज और सिंचाई के साधनों का प्रयोग करके कृषक अपनी उपज बढ़ा सकते हैं और ज़रीबी, बेकारी, ऋणग्रस्तता आदि दूर की जा सकती है। इस प्रकार कृषि एवं ग्राम्य जीवन में सन्निष्ठता है। ग्रामीण समाजशास्त्र ग्रामीण, विकास तथा समस्याओं के हल में पथ-प्रदर्शन कर कृषि की उन्नति में ही योग दे सकता है।

7) ग्रामीण एवं नगरीय जीवन को समझने में उपयोगी (Helpful in Understanding of the Rural and Urban life) →

ग्रामों पर नगरीय जीवन का स्पष्ट प्रभाव देखा जा सकता है और नगरों में रहने वाले भी ग्रामीण स्वर्ग, रीति-रिवाज, प्रथाओं, संयुक्त परिवार प्रणाली, जाति, आदि के लक्षण ही सुझ नहीं है। अतः ग्राम और नगरों के पारस्परिक सम्बन्धों का अध्ययन करने, उन्हें एक-दूसरे के लिए उपयोगी बनाने, पारस्परिक सहयोग प्रदान करने, दोनों के विकास के नियमों को ज्ञात करने, आदि कार्यों में ग्रामीण समाजशास्त्र अपना सहायपूर्ण योगदान दे सकता है।

8) ग्रामों के अध्ययन का महत्व (Significance of village studies) →

गांव का अध्ययन करके हम ग्रामीण

जीवन के बारे में वैज्ञानिक जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। अब लक्ष गांवों के बारे में उपलब्ध जानकारी यात्रियों आदि के द्वारा संकलित की गयी है जो मानवतात्मक अर्थिक है और वैज्ञानिक कम। प्रशिक्षित और वैज्ञानिक ज्ञान रखने वाले व्यक्तियों द्वारा ग्रामीणों का अध्ययन करके संकलित की जाने वाली जानकारी अर्थिक विश्वसनीय और उपयोगी होगी। इस प्रकार के ग्रामीण अध्ययन किसी भी देश के राजनैतिक, आर्थिक, सामाजिक एवं सामाजिक इतिहास को ज्ञात करने में महत्वपूर्ण होते हैं। ग्रामीण जीवन के भूतकाल को ज्ञात कर हम वर्तमान को समझ सकते हैं तथा भविष्य की सफल योजना बना सकते हैं। इस प्रकार के अध्ययनों से सामाजिक जीवन से सम्बन्धित नयी अवधारणाओं का जन्म होगा जो सामाजिक जीवन को समझने में सहायक होंगे तथा क्षेत्रीय आचार पर ग्रामीण भिन्नताओं का पता चला पायेगा जिसका उपयोग उस क्षेत्र की ग्राम विकास की योजना बनाने में किया जा सकेगा।

इस प्रकार ग्रामीण समाजशास्त्र एक उपयोगी विज्ञान है जो अनेक रूपों में ग्रामीण सामाजिक जीवन को समझने में योग देता है। ग्रामीण समस्याओं को समझने, ग्राम विकास की योजनाओं एवं कार्यक्रम को बनाने तथा लागू करने, ग्रामीण समाज के नियमों को ज्ञात करने, उनका वैज्ञानिक अध्ययन करने तथा प्राप्त निष्कर्षों द्वारा मानव ज्ञान में वृद्धि करने, आदि के रूप में ग्रामीण समाजशास्त्र की उपयोगिता आसीन्दोच्य है।

⇒ ग्रामीण समाजशास्त्र का महत्व दिन-प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है। कारण:—

- ① सामाजिक जीवन मारुत में ज्यादातर ग्रामीण जीवन है।
- ② लगभग 80% भारतीय आबादी गांवों में रहती है।
- ③ कृषि देश की आजीविका है।
- ④ ग्राम अध्ययन की मूल इकाई है।
- ⑤ भारतीय समाज की वै परिवर्तन की अनूठी प्रकृति।

- 6) ग्रामीण समाजशास्त्र हमें ग्रामीण समाजियों और उनके समाजियों के अध्ययन के बारे में ज्ञान प्रदान करता है।
- 7) ग्रामीण समाज प्राचीन सांस्कृतिक विरासत का भंडार गृह है। इसके अध्ययन आवश्यक है।
- 8) लोकतांत्रिक विकेंद्रीकरण का अस्थिर महत्व। ग्राम समुदाय का वैज्ञानिक अध्ययन इसके लिए एक पूर्व आवश्यकता है।
- 9) आधुनिकीकरण, औद्योगिकीकरण और शहरीकरण का बढ़ता प्रभाव
- 10) ग्रामीण समाजशास्त्र, ग्रामीण पुनर्निर्माण के संलग्न में व्यापक मीडिया प्रदर्शन का एक साधन है।
- 11) हाल के वर्षों में, ग्रामीण समाजशास्त्रियों ने कृषि संबंधी, ग्राम पुनर्स्थापना, किसान आंदोलनों, ग्रामीण तरीकरण प्रणाली, ग्रामीण नेतृत्व आदि के अध्ययन को सर्वोच्च महत्व दिया है।

ग्रामीण समाजशास्त्र के महत्व को अनदेखा या कम नहीं किया जा सकता है। ग्रामीण समाजियों के समाजशास्त्र को समझने में ग्रामीण समाजशास्त्र की भूमिका महत्वपूर्ण है।